रिकार्ड–जले ना क्यों परवाना.....ओमशांति प्रातःक्लास 3.1.67
मीठे2 रुहानी बच्चों ने गीत की लाइन सुनी।जबकि बाप इतना जलवा दिखाते हैं।तुम इतने हुसेन बन जाओगे तो फिर क्यों नहीं ऐसे बाप का बन जाना चाहिए।जो बाप श्याम से सुंदर बनाता है।बच्चे समझते हैं हम सांवरे से गोरा बनते हैं।एक की बात नहीं।वो तो कृष्ण को श्याम सुंदर कह देते हैं।चित्र भी ऐसे बनाते हैं कोई सुंदर ,कोई श्याम।मनुष्य समझते नहीं कि यह हो कैसे सकता है।सतयुग का प्रिंस कृष्ण सांवरा तो हो ना सके।कृष्ण के लिए तो सब कहते हैं इन जैसा पति मिले, इन जैसा कृष्ण मिले।फिर वो श्याम कैसे होगा?कुछ भी समझते नहीं हैं।इनको सांवरा क्यों बनाया है ,कारण चाहिए ना।यह जो दिखाते हैं सर्प पर डांस किया. .....ऐसी बात तो हो ना सके।शास्त्रों में ऐसी2 बातें सुन कर यहां कोई2 की महिमा करने लग पड़ते हैं कि इनको छोटेपन में सर्प भी नहीं डसता था।ऐसे कोई बातें हैं नहीं।चित्रों में दिखाते हैं शेषनाग की शैया पर नारायण बैठे हैं।ऐसे कोई सर्प की (शैया) होती है क्या?इतने सैकड़ों मुख होते हैं क्या?कैसे2 चित्र बैठ बनाये हैं।बाप समझाते हैं यह सब भक्तिमार्ग के बाह्यात चित्र हैं।इनमें कुछ रखा नहीं है ;परंतु यह भी ड्रामा में नूंध है।शुरू से लेकर अब तक जो नाटक शूट हुआ है उनको फिर रिपीट करना है।यह सिर्फ समझाया जाता है कि भक्तिमार्ग में क्या2 करते हैं।आगे तो एक पानी की लेक में बड़ा2 चित्र नारायण का बनाते थे।आगे यह सब देखते थे तो इतना वण्डर नहीं खाते थे।अब जब बाप ने समझाया है तब बुद्धि में आता है बरोबर यह सब भक्तिमार्ग की बातें हैं।भक्तिमार्ग में जो कुछ हुआ है सो फिर से होगा।और कोई में भ्झी यह समझ नहीं है।यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि कितना करते हैं।प्रेयर करते हैं कि लड़ाई बन्द हो जावे।तुम तो जानते हो अनेक धर्मों का विनाश ,एक धर्म की स्थापना होनी ही है।इसमें तो बड़ा कल्याण है।अभी तुम यह प्रेयर आदि नहीं करते हो।वो सब करते हैं भगवान से फल लेने लिए।भगवान का फल है जीवनमुक्ति ;क्योंकि मुक्ति से जाना है जीवमुक्ति में।तो यह सिर्फ समझाया जाता है कि भक्ति दुर्गति मार्ग है।बाकी होगा तो फिर भी ऐसे ही।तुम भी ऐसे ही भक्ति मार्ग में फंसेंगे।यथा राजा–रानी तथा प्रजा कहा जाता है।यहां तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य।कौरव,कांग्रेस,.....यह तीनों अक्षर तुम लिख सकते हो।बोलो हम अक्षर ही गीता के लिखते हैं।गीता में है ना भारतवासी कौरव, पाण्डव क्या करत भये।बरोबर इन्होंने मूसल निकाले।अपने कुल का विनाश किया।यह सब आपस में दुश्मन हैं।तुम अखबार या न्यूज आदि नहीं सुनते हो।जो सुनते हैं वो समझ सकते हैं कि दिन प्रतिदिन कितनी खिटपिट हैं।एक–दो के कितने दुश्मन हैं।घर बैठे ही एक–दो को उड़ा देंगे।तुम तो राजयोग सीख रहे हो।तो राजाई करने लिए पुरानी दुनियां की सफाई जरूर चाहिए।फिर नई दुनियां में सब कुछ नया होगा, सतोप्रधान।5 तत्व भी सतोप्रधान होते हैं।समुद्र की ताकत नहीं जो उछल दे नुकसान करे।अभी तो इन पांच तत्वों के भी कितने विघ्न पड़ते हैं।वहां तो प्रकृति दासी हो जाती है।इसलिए दुःख की कोई बात नहीं।यह भी बना बनाया ड्रामा का खेल है।स्वर्ग कहा जाता है सतयुग को।क्रिश्चियन लोग भी कहते हैं पहले2 ही था।भारत है अविनाशी खंड।सिर्फ उनको पता नहीं है कि हमको लिबरेट करने वाला बाप भारत में ही आता है।शिवजयंती भी मनाते हैं।तो भी समझते नहीं हैं।अभी तुम समझा सकते हो।भारत भारत में शिवजयंती मनाते हैं।तो भी समझते नहीं हैं।अभी तुम समझा सकते हो।भारत में शिवजयंती मनाई जाती है।जरूर शिवबाबा ने भारत में ही आकर भारत को फिर से सतयुग (हैवेन) बनाया था।अब फिर बना रहे हैं।जो प्रजा बनने वाले होंगे उनकी बुद्धि में कुछ बैठेगा।आने वाले ही ना होंगे तो कुछ समझेंगे नहीं।जो इस राजधानी के होंगे वो समझेंगे बरोबर हम शिवबाबा के बच्चे हैं।लिबरेटर ज्ञान का सागर शिवबाबा है।ब्रह्मा को नहीं कहेंगे।ब्रह्मा भी इनसे लिबरेट होते हैं।सबको एक बाप ही लिबरेट करते हैं ;क्योंकि तमोप्रधान है।ऐसे2 अंदर में विचार–सागर–मंथन करना चाहिए।हम मुरली ऐसे चलावेंगे जो मनुष्य (झट) समझ जावें। (नम्बरवार) तो बच्चे हैं ना।यह है नालेज।इसकी तो रोज स्टडी करनी चाहिए।

.....हंगामा होने से कितने दुश्मन बन पड़े।पहले तो उनको ज्ञान बहुत अच्छा लगता (था)।अभी भी बहुत ऐसे समझते हैं कि कुछ शक्ति है।यह नहीं समझते कि परमात्मा (की) प्रवेशता है।कुछ ताकत है।आजकल तो रिद्धी–सिद्धी की ताकत तो बहुतों में है।गीता पुस्तक उठाय सुनाते रहते हैं।बाप कहते हैं यह सब भक्तिमार्ग की पुस्तकें हैं।ज्ञान का सागर तो मैं हूँ।मुझे ही भक्तिमार्ग में ....याद करते हैं।ड्रामाप्लानअनुसार यह भी ड्रामा में नूंध है।सा. भी होते हैं।भक्तिमार्ग वालों को भी .....करते हैं।ज्ञान नहीं उठाते हैं।उनके लिए भक्ति ही अच्छी।फिर भी उससे मनुष्य सुधरते तो हैं ना।.....भगवान का भजन करने वाले लिए कब कोई उल्टी बात नहीं कहेंगे।फिर भी भक्त हैं ;परंतु आजकल भक्त हैं तो भी झूठ देवाला मार देते हैं।ऐसे थोड़े ही भक्त देवाला नहीं मार सकते हैं। (कार्य) व्यवहार में तो देवाला आदि मारते ही हैं।ज्ञान में आने से भी देवाला मार देते हैं।ऐसे नहीं कि शिवबाबा का बच्च बना हूँ तो देवाला नहीं मारेंगे।इससे ज्ञान का कोई ताल्लुक नहीं है।समझते हम बाबा के लिए धंधे आदि करते हैं जो कुछ होगा बाबा को देंगे।बाबा ऐसी बातें कब सुनते ही नहीं हैं।बाबा को क्या .....परवाह रखी है इन बातों की।शावन शाह की हुण्डी तो कैसे भी सकारी जावेगी।सब कुछ हो ही रहा है।ऐसे थोड़े ही स्थापना में कुछ विघ्न पड़ते हैं।तुम बच्चे सर्विस पर लगे हुये हो।कितने बच्चे पैदा होते हैं।समझते हैं श्रीमत पर सर्विस में लगने से फल पावेंगे।हमको तो सब कुछ वहां ट्रांसफर करना हे।बैग बैगेज सब कुछ ट्रांसफर कर देना है।बाबा ने सब कुछ ट्रांसफर कर दिया ना।बाबा को शुरू में मजा बहुत आया था।वहां से जब निकला तो एक गीत बनाया था।अलफ को अल्लाह मिला, बे बादशाही सब भागीदार को दे दिया।राजाई में चलते थे।शाम होती थी, घूमने–फिरने चले जाते थे।भागीदार थे।समझते थे..... ...इतना काम नहीं करेंगे।भागीदार में काम अच्छा करेंगे।तो अपने को स्वतंत्र रख दिया।संस्कार ही ऐसे थे।फिर तो देखा बाहर राजाई मिलती है।एक टेढ़ी पगड़ी वाले का, एक चतुर्भुज का सा. किया।समझा द्वारिका का बादशाह बनूंगा।ऐसे नशा चढ़ता था।अभी यह विनाशी पैसे क्या करेंगे?तुम बच्चों को भी खुशी होनी चाहिए ना।हमको बाबा स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं।बच्चे इतना पुरुषार्थ नहीं करते हैं।चलते2 गटर में गिर पड़ते हैं।अच्छे2 बच्चे निमंत्रण देने वाले ,कब बाप को याद नहीं करते।बाबा के पास तो पत्र आना चाहिए ना।बाबा हम बहुत खुश हैं।आपकी याद में मस्त रहते हैं।बहुत हैं जो कब याद भी नहीं करते हैं।याद की यात्रा से ही खुशी जोर की चढ़ेगी।ज्ञान में भले कितना भी मस्त रहते हों;परंतु देहअभिमान कितना है।देहीअभिमानीपना कहां?ज्ञान तो बड़ा ईज़ी है।योग में ही माया विघ्न डालती हे।गृहस्थ व्यवहार में भी अनासक्त होकर रहना है।ऐसे ना हो माया अंगुली लगा दे।माया काटती ऐसे है जैसे चूहा।चूहा काटता ऐसे है जो खून निकल आता है तो भी पता नहीं पड़ता है।बच्चों को भी पता नहीं पड़ता है।देहअभिमान में फंसने से हमारी कितनी दुर्गति हो जावेगी।उंच पद पा नहीं सकेंगे।बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए ना।मम्मा बाबा मुआफिक हम भी तख्तनशीन बनें।बाप है दिल लेने वाला।दिलवाला मंदिर का पूरा यादगार है।अंदर हाथी पर महारथी बैठे हुये हैं।तुम्हारे में भी महारथी घोड़ेसवार, प्यादे हैं।हर एक को अपनी नब्ज ....देखनी है।बाबा क्यों देखें?तुम अपने को देखो हम कितना बाप को याद करते हैं और बाप की सर्विस (में) हमारा बाप के साथ योग है?रात को जागकर बाप को याद करते हैं?हम बहुतों की सर्विस पर हैं?(चार्ट) रखना चाहिए ना।बाप को हम हडी कितना समय याद करते हैं।बहुत हैं जो समझते हैं हम तो निरंतर याद करते रहते हैं ;परंतु यह हो नहीं सकता।कोई समझते हैं हम तो शिवबाबा का बच्चा हूँ ना ;परंतु .....अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।बाप के डायरैक्शन बिगर कुछ करते हैं तो गोया याद नहीं करते हैं।बाप की याद में सदैव हर्षितमुख रहना चाहिए।मुरझाया हुआ नहीं।याद में रहने वाले

(का) मुख हर्षित रहेगा।खुशी में किसी को भी बहुत रमणीकता से समझावेंगे।मस्त रहेंगे।वो भी बहुत थोड़े हैं जो सर्विस पर तत्पर रहते हैं।हुक्म भी क्यों करें?सुना फलानी जगह प्रदर्शनी है झट भागना चाहिए।बाबा को लिख दी, बाबा हम जाते हैं फलानी जगह।फिर बाबा देखेंगे दरकार नहीं है तो लिख देंगे थोड़ा ठहरो।सर्विस का बड़ा शौक रहना चाहिए।हम जाकर प्रोजेक्टर पर वा प्रदर्शनी पर समझाते हैं।चित्रों पर समझाना तो बहुत सहज है।यह है उंच ते उंच भगवान फिर इनकी है रचना।ब्रदर हुड को इन्होंने फादरहुड कर दिया है।पहले2 तो शिव के चित्र पर ही समझाना चाहिए।यह है सभी आत्माओं का बाप।सभी का परमपिता परमआत्मा।निराकार।हम आत्मा भी निराकार हैं।गाया भी जाता है आत्मा स्टार भृकुटि के बीच रहती है।शिवबाबा भी स्टार है।मनुष्य तो समझते हैं अंगुष्ठे मिसल है, ऐसे नहीं है।आत्मा है ही स्टार।अगर इतनी बड़ी चीज़ होती गोड़ा हो जावे।हंसी–खुशी में यह कह देना चाहिए।कहते हैं ब्रह्माण्ड अर्थात् अण्डे सब ब्रह्म तत्व में रहते हैं ;परंतु अण्डे जितना नहीं है।यह तो स्टार है ;परंतु स्टार की पूजा कैसे हो।इसालिए बड़ा बनाते हैं।बाकी आत्मा कोई बड़ी नहीं है।आत्मा स्टार मिसल है।इस आत्म में ही 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है।84लाख तो हो नहीं सकते।मनुष्य कोई जानवर नहीं बनते हैं।आत्मा कब 84लाख जन्म नहीं लेती।यह बाप बैठ समझाते हैं।आत्मा पहले नंगी आती है।फिर शरीर धारण कर पार्ट बजाती है।सतोप्रधान आत्मा पुनर्जन्म लेते2 आयरन एज में आ जाती है।बाद में आने वाले तो 84जन्म नहीं लेंगे।सभी तो 84जन्म ले ना सकें।समझते हो?अगर समझते हो तो सब कहो हां ,हम समझते हैं।नहीं तो फिर हम समझावें।अब समझाओ आत्मा में पार्ट भरा हुआ है।आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है।नाम, रूप, देश, काल सब फिर जाता है।ऐसे2 भाषण करना चाहिए।कहते भी हैं सेल्फ रियलाइजेशन ;परंतु कौन करावे?आत्मा सो परमात्मा कहना यह कोई सेल्फ रियलाइजेशन हुई क्या?अब समझा?नोट करो।यह नई नालेज है।बाप जो ज्ञान का सागर , सर्व का सद्गतिदाता,मोस्ट बिलवेड फादर, पतित–पावन है वो हमको समझाते हैं।फिर उनकी भी खूब महिमा करो।अब उनकी महिमा सुनी?आत्मा का परिचय बताया।अब परमात्मा का भी बताते हैं।उनको कहा भी जाता है परमपिता परमआत्मा माना परमात्मा।आत्माओं का बाप भी वैसा ही होगा ना।वो फिर छोटा वा बड़ा तो हो ना सके।परमआत्मा माना परमात्मा।सुप्रीम सोल।सोल माना परमात्मा नहीं कहेंगे।सोल माना आत्मा।परमपिता परमआत्मा।वो परे ते परे परमधाम में रहने वाली है।वो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं।इसलिए उनको परमपिता परमआत्मा कहा जाता है।इतनी छोटी आत्मा में ही इतना पार्ट भरा हुआ है।पतित–पावन भी उनको कहा जाता है।उनका नाम एक ही शिव है।शिवबाबा कहते हैं।रुद्र बाबा नहीं कहेंगे।नाम एक ही है शिवबाबा।चित्र एक ही है।भक्तिमार्ग में सिर्फ नाम अनेक रख देते हैं।अच्छा, अब यह समझा परमपिता परमात्मा क्या है?वो ज्ञान सागर है।उनको ही सब याद करते हैं कि हे पतित–पावन आकर पावन बनाओ।तो जरूर आना पड़े।वो आते हैं तब जबकि एक धर्म की स्थापना करनी होती है।आदि सनातन प्राचीन है ही देवी देवता धर्म।अभी तो है कलियुग।कितने ढेर मनुष्य हैं।नई दुनियां सतयुग में बहुत थोड़े होंगे।गाया हुआ भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी दुनियां का विनाश।यह वो ही महाभारत लड़ाई का (समय) है।बरोबर गीता द्वारा ही आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई है।सिर्फ उसमें भूल कर दी है।कृष्ण नाम डाल दिया है।कृष्ण तो है नम्बरवान रचना।रचता तो मैं परमपिता परमात्मा ही हूँ।मैं तो पुनर्जन्म रहित हूँ।वो पूरे 84जन्म लेने वाले उनको फिर परमात्मा कैसे कह सकते हैं।अब जज करो परमपिता परमात्मा निराकार शिव ठहरा या कृष्ण ठहरा?बाप कौन ठहरा?गीता का भगवान कौन?भगवान शिवक को कहेंगे या कृष्ण को?भक्तिमार्ग के शास्त्रों में कितना उल्टा लिख दिया है।भगवान तो एक को कहा जाता है।फिर अगर इन बातों को कोई ना माने तो समझ जावेंगे यह आदि सनातन देवी देवता धर्म के नहीं हैं।सतयुग में आने वाले झट मानेंगे और पुरुषार्थ भी करेंगे।मूल बात ही यह है।इसमें ही तुम्हारी विजय होनी है।अच्छा, गुडमार्निंग।